वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 44	Year 5	Volume 8	May 2016 Chandigarh	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 120-see page 2

fopkj

मां का स्थान पाचं देवों में सब से उपर है

विद्वानों ने शास्त्रों में बताये ं पाचं देवों की परिभाशा अपने अपने ढंग से की है। पुराणों में ब्रहमा, विश्णु और महेश को पांच देवों में स्थान दिया है। परन्तु आर्य समाज के संस्थापक महर्शि दयानन्द सरस्वती के अनुसार यह पाचं देव किसी अलग दुनिया के फरिश्ते न हो कर हमारे घरों में ही रहते है और हमारे बहुत पास हैं। उन्हें कहीं और ढूंढने की आवश्यकता नहीं।

पहला देव जन्म देने वाली मां है। सन्तान चाहे वह लड़का है या लड़की उनका कर्तव्य है कि मां की तन,मन, धन से सेवा करें। उसे खश रखें। वह किसी भी हालत में नाराज न हो।

Contact:
Bhartendu Sood, Editor, Publisher &
Printer # 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

उसका नाराज होना बच्चों के लिये बहुत बड़ा पाप है। दूसरा देवता पिता है। इस देवता की भी ऐसे ही सेवा करें व ख्याल रखें जैसे मां का रखते हैं।

तीसरा देवता गुरू है जो हमें ज्ञान देता है और जीवन में मार्ग दर्शन करता है। इस देवता की सदैव इज्जत करें। चौथा देवता अध्यात्मिक गुरू को कहा गया है परन्तु अध्यात्मिक गुरू उसी को कहा गया है जो कि विद्वान व स्वाध्याय करता हो, धामिर्क हो, उंचे आचरण का हो, त्यागी, तपस्वी, मननशील व वैरागी हो, न कि दुनिया की चकाचोंध में डूबकर, मोह, माया, अंहकार, काम, क्रोध से ग्रस्त, धन और नाम बटोरने में लगा हो। सबका भला चाहने वाला हो। लोगों का अज्ञान दूर करने के कार्य में लगा हो। ऐसे व्यक्ति की अर्पणभाव से सेवा करें और उसकी आवश्यकताओं का ख्याल रखें। हों पर अगर वह मोह, माया, अंहकार, काम, क्रोध से ग्रस्त है तो चाहे वह कितना भी ज्ञानशील हो उसको अपना अध्यात्मिक गुरू मानना अपको लाभ के स्थान पर हानी पहुंचा सकता है।

पांचवा देव पति के लिये पत्नी व पत्नी के लिये पति है। जब यह दोनो एक दूसरे को देवता मानकर घर की नाव चलातें हैं तो भंवरों और तूफानों में भी नाव को कुछ नहीं होता और परिवार अपने सुखी जीवन को प्राप्त करता है। इसका सब से सुन्दर उदाहरण श्री रामचन्द्र और माता सीता है।जिस घर में इन पांच देवों की पूजा हो वह घर निश्चय स्वर्ग बन जाता है। यह पूछे जाने पर कि पांच देवों में सब से उपर कौन है, तो महर्षि दयानन्द सरस्वती का कहना है–––निस्संदेह मां क्योकि जो तयाग बच्चे के लिये मां करती है वह निश्चय ही और कोई नहीं कर सकता। क्या उस मां के उपकार को भूलाया जा सकता है, जिसने हमें 9 माह तक अपनी कोख में रखा और जन्म देते ही भरपूर प्यार दूलार दिया, अपने सुख का त्याग देकर हमें पाला।

मां कैसे सबं से अलग है, निम्न एक छोटे से उदाहरण से सामने आ जाता है

जब एक स्कूल जाती लड़की बारिश में भीग कर घर आई तो

पिता ने कहा–––– छतरी क्यों नहीं ले गई?

बहन ने कहा––– तुझे बारिश रूकने का इन्तजार करना चाहिए था।

भाई ने गुस्से में कहा––– जब बिमार होगी तभी तुझे समझ आएगी।

मां तुरन्त तोलिये से पोंछते हुए बहुत प्यार से बोली–––क्या बारिश मेरी बच्ची का घर पहुंचने का इंतजार नहीं कर सकती थी?

तभी तो ईश्वर के बाद मां का स्थान सब से उंचा है।

पर यह भी आवश्यक है कि हम सभी देवों का आदर और सेवा करें । एक देवता की कर दी और दूसरे की अवेहलना की तो वह भी बहुत अनुचित है। उदाहरण के लिये पत्नि को तो देव मान लिया और मां की अव्हेलना की तो वह पुण्य के स्थान पर पाप अधिक देगा। इसी तरह मां को तो देवता का स्थान दे दिया पर पत्नि की अवेहलना की वह भी उतना ही पाप है। सभी देव आदर और सेवा के अधिकारी है।

''आत्मवत् सर्वभूतेषु''
सभी प्राणियों को अपनी आत्मा

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डाबर, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगडी, कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :
HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines
Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh
Tel.: 0172-2708497

if=dk e fn;s x;s fopkjk d fy, y[kd Lo; ftEeokj gA y[kdk d VyhQku u- fn, x, g
U;kf;d ekeyk d fy, p.Mhx< d U;k;y; eku; gA

Bhartendu Sood Umang Printer, Plot No. 26/3, Ind. Area, Phase-II, Chd. 9815628590
Owner Bhartendu Sood **Place of Publication** # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

प्रभु को मित्र बना कर देखो

कन्हैया लाल

कोई व्यक्ति अपने देश के राजा के पास गया और समय मिलने पर बहुत विनम्रता से बोला–––––महाराज मैं आप से कुछ मांगने नहीं आया और न ही कोई फरियाद लेकर आया हूं। मेरी एक सम्सया है, यह दुनिया मुझे इज्जत मान तो क्या देना, अपमान करती है। जिस कारणमैं दुखी रहता हूं। अगर आप इस का कुछ हल कर दे ंतो मैं आपका बहुत आभारी हूंगा।

राजा ने सुना तो बोले–––देखो मैं कल राज्य की बड़ी चौगान में आ रहां हूं। तुम राज्य का झंडा पकड़े वही खड़े रहना।

राजा हाथी पर बैठा आ रहा था । तभी उसकी नजर उस व्यक्ति पर पड़ गई। राजा ने अपने अंगरक्षक से उस व्यक्ति को बुलवा भेजा। राजा ने उस व्यक्ति का हाल चाल पूछा और मंच पर अपने नजदीक ही स्थान दे दिया। उस व्यक्ति के मित्रों, सम्बन्धियों और विरोद्धियों ने जब उसे राजा के इतने करीब देखा तो हैरान रह गये। सम्मेलन खत्म हुआ तो राजा ने कहा अब घर जाओ समझो तुम्हारा समय बदल गया है। रात होने तक यह बात जो उसके मित्र,शत्रु और सम्बन्धि वहां नहीं थे उनको भी मालुम हो गई थी। अगले दिन से ही सभी की दृश्टि बदल गई थी। जो अपमान करते थे वही मान करने लगे, उसके गुण गाने लगे।

सोचने की बात यह है कि राजा के पास कुछ देर बैठने से अगर इतना प्यार और मान मिल सकता है तो जो राजाओं का राजा ईश्वर है, अगर उसके पास बैठेंगे तो हमारी स्थिती क्या होगी? तभी तो कहा है कि भगवान के मित्र बनो, उसके प्यारे हो जाओ और ऐसा विश्वास अपने हृदय में पैदा करो कि वह ईश्वर जो भी कर रहा है उसी में हमारी अच्छाई है। जो ईश्वर को सखा मान लेता है उसे किसी से भी किसी भी प्रकार का भय नहीं रहता। महर्षि दयानंद निर्भय हो कर समाज में फैले पाखण्डो का खण्डन निर्भीक हो कर इस लिये कर सके क्योंकि उन का ईश्वर पर अटूट विश्वास था।

पर उसका मित्र बनने के लिये कुछ शर्ते भी है जो कि व्यक्ति को निभानी होंगी। पहली, भगवान कहते हैं कि अगर मुझ तक पहुंचना है तो तुम्हें राग को छोड़ना पड़ेगा। किसी भी वस्तु व्यक्ति के साथ राग और मोह ईश्वर और व्यक्ति के बीच में एक दिवार है।

दूसरा सत्य का मार्ग अपनाओ। जब सत्य बोलोगे तो निर्भय रहोगे। ईश्वर निर्भय लोंगो के साथ ही मित्रता करता है।

तीसरा, प्रभु कहतें हैं कि मुझ से मित्रता और प्यार करने के लिये मेरे सभी प्राणियों, जिस में इंसान पशु ओर पक्षी सभी आतें हैं, उन सब से प्यार करों यह तभी सम्भव है जब तुम अपने परिवार का दायरा सिमित न रख कर उस को बढ़ाओं। यह केवल परिवार तक ही सीमित न रहें बल्कि इसमें मुहल्ला, नगर, देश और सारा विश्व आ जाये।

यदि हम ऐसे कर लेते हैं तो प्रभु हमारे मित्र बन जायेंगे। फिर हमें राजाओं के पास जाने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

Understanding and commonsense solve many a problems

Urvashi Goel

The ruler of an important country was in a fix after his favourite horse, a spirited charger, went missing. The king sent several of his ministers and guards to look for the horse that seemed to have just disappeared, but to no avail. In desperation, the king offered a large sum for its return. This too failed. The days went by and no one had an inkling about where the horse was.

In the king's court was a simple soul, who told the king that he could find the lost horse. "You, when the best and brightest of men in my court have failed?" mocked the king. "Yes, sir," replied the simpleton. As the king had nothing to lose, he grudgingly agreed. Within hours, the horse was tethered in front of the royal palace. When the king saw it, he was ecstatic and thankful.He issued a large reward to his simple-minded servant and was eager to know how he found the horse.

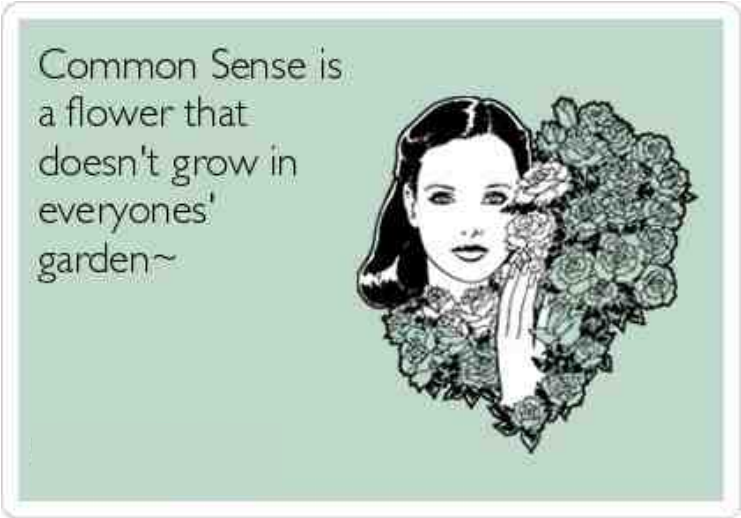

"Why, sire, it was very easy, indeed," said the simpleton, "I merely put myself in your horse's place and asked myself where I would have gone were I a horse. I went there. And there your horse was!" As the above story suggests that understanding and commonsense are something that can solve many a problems faster than the bookish knowledge. But, problem is that every man sees the world not, as it is, but as he is. His coloured vision tints all that is within his focus to the colour through which he views the world around him. Understanding is merely to put ourselves in the shoes of another. When the reality of where the other person is coming from, is clear, understanding another becomes a simple exercise. This fosters deep human bonds of friendship.

As a thinker put it, "Understanding another permits us to escape the isolation of our separate selves and enter into that warm circle of human kinship and friendship!"

If you want to be a great leader

Nothing is smaller in life than your ego – and nothing is bigger than serving the great cause of other people.

Dream big, do not hesitate. The greater your dreams, the more you can achieve.

आगे बढ़ना है तो ज़रूरी है रुकने का अभ्यास भी

सीताराम गुप्ता

कहा जाता है कि जीवन चलने का नाम है अतः चलते रहो। चरैवेति, चरैवेति। चलना, निरंतर आगे बढ़ना ही जीवन है, रुकना या पीछे हटना मृत्यु है। लेकिन निरंतर चलते रहने के लिए रुकना, विश्राम करना या ठहरना भी अनिवार्य है। पहले कहा गया है कि रुकना मृत्यु है तथा बाद में कहा गया है कि आगे बढ़ने के लिए रुकना ज़रूरी है। थोड़ा विरोधाभास दिखलाई पड़ रहा है पर है नहीं।

गति वस्तुतः दो प्रकार की होती है। एक शरीर की गति और दूसरी मन की गति। मन जो शरीर को चलाता है, उसे नियंत्रित करता है उसकी गति को नियंत्रित करना भी अनिवार्य है। एक रुकने का अर्थ भौतिक शरीर की गति का रुकना अर्थात् कर्म से मुँह मोड़ना है लेकिन दूसरे रुकने का अर्थ मन की गति को विराम देना है। मन अत्यंत चंचल है अतः उसको सही दिशा में ले जाने के लिए उसको रोकना तथा नियंत्रित करना अनिवार्य है। चलना जीवन है तो रुकना पुनर्जन्म है। जब मन रुक जाता है तो वह शांत–स्थिर होकर पुनर्निर्माण में सहायक होता है। उपयोगी सृजन का कारण बनता है। भौतिक शरीर अथवा स्थूल शरीर को निरंतर चलाने के लिए कारण शरीर अर्थात् मन का ठहराव ज़रूरी है। भौतिक शरीर तो सोते–जागते अथवा आराम की अवस्था में भी गतिशील रहता है अतः ठहराव शरीर का नहीं मन का होता है। जब मन तेज़ भागता है अथवा ग़लत दिशा में दौड़ता है तो ठहराव की ज़रूरत होती है। नकारात्मक भावधारा से युक्त मन शरीर की गति को बाधित करता है, उसका ह्रास करता है, उसे जर्जर बनाता है, उसे पीछे ले जाता है तथा अनेक रोगों से भर देता है जबकि सकारात्मक भावधारा से युक्त मन शरीर का पोषण करता है, उसे मज़बूत बनाता है, उसे आगे ले जाता है तथा उसकी रोगों से रक्षा कर आरोग्य प्रदान करता है। सकारात्मक मन को नहीं अपितु नकारात्मक मन को ठहराना है। मन की नकारात्मकता समाप्त कर उसे सकारात्मक बनाना ही वास्तविक उन्नति अथवा विकास है।

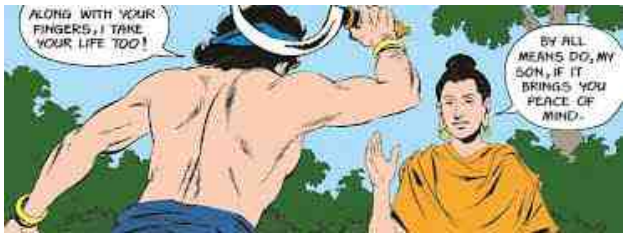

मिट्टीयुक्त पानी जब स्थिर हो जाता है तो उसमें घुली मिट्टी नीचे बैठ जाती है और स्वच्छ पानी ऊपर तैरने लगता है। मन को रोकने पर भी यही होता है। विचारों का परिमार्जन होने लगता है। नकारात्मक घातक विचार नीचे बैठने लगते हैं। सकारात्मक उपयोगी विचार प्रभावी होकर पूर्णता को प्राप्त होते हैं और जीवन को एक सार्थक गति मिलती है। कार्य करता है हमारा शरीर लेकिन उसे चलाता है हमारा मस्तिष्क और मस्तिष्क को चलाने वाला है हमारा मन। मन की उचित गति अर्थात् सकारात्मक भावधारा के अभाव में न तो मस्तिष्क ही सही कार्य करेगा और न शरीर ही। इसलिए शरीर को सही गति प्रदान के लिए मन को रोकना और उसे सकारात्मकता प्रदान करना अनिवार्य है। जब बुद्ध और अंगुलिमाल का आमना–सामना होता है तो दोनों तरफ से ठहरने की बात होती है। अंगुलिमाल कड़ककर बुद्ध से कहता है, ''ठहर जा।'' बुद्ध अत्यंत शांत भाव से पूछते हैं, ''मैं तो ठहर गया हूँ पर तू कब ठहरेगा?'' एक आश्चर्य घटित होता है। बुद्ध की शांत मुद्रा सारे परिवेश को शांत–स्थिर कर देती है। उस असीम शान्ति में अंगुलिमाल भी आप्लावित हो जाता है। वह ठहर जाता है और दस्युवृत्ति त्याग कर बुद्ध की शरण में आ जाता है। जब व्यक्ति पूर्ण रूप से ठहर जाता है, उसके मन से उद्विग्नता तथा द्वंद्व मिट जाता है तभी समता का उदय होता है। शरीर और मन की गति में अंतर होना ही सब प्रकार की समस्याओं का मूल है। शरीर और मन की गति में सामंजस्य होना अनिवार्य है। जीवन में भाग–दौड़ का एक ही उद्देश्य है और वो है आनंद की प्राप्ति लेकिन जितना हम भाग–दौड़ करते हैं आनंद से दूर होते चले जाते हैं। आनंद के लिए जीवन की गति तथा विचारों के प्रवाह को नियंत्रित कर उन्हें संतुलित करना ज़रूरी है। यही आध्यात्मिकता है। आध्यात्मिकता हमें सहज होना सिखाती है। जब हम सहज होते हैं तभी अपने वास्तविक 'स्व' अर्थात् चेतना से जुड़ते हैं। 'स्व' में स्थित होना ही वास्तविक स्वास्थ्य है। यही वास्तविक आनंद अथवा परमानंद है।

Editorial-1

Laugh it off, the joke's on you

AS a young boy I was told that to promote laughter you should laugh with others and not at others, and the best and most inoffensive laughter is when you make yourself the subject of ridicule. But that art is becoming extinct, like traditional comedians of old Bolly wood films: Johnny Walker, Mehmood, Rajendra Nath, Mukri, to name a few. They had the ability to carry the movie on their shoulders and leave the hero struggling for visibility. Who can forget Mehmood and the legendary Kishore Kumar in Padosan? Even today, if I spot it on any channel, I am glued to the television. But we are passing through a phase where our famed stage actors choose others to generate laughter. Joy for a few becomes pain for others and this, time and again, creates trouble. Mahatma Gandhi had said: "If I had no sense of humour, I would long ago have committed suicide." His self-deprecation was evident when he visited England in 1931. Despite the hostile climate, he chose to wear the traditional loincloth and sandals. While he was walking through the streets of London, a cheeky young urchin yelled out: "Hey, Gandhi, where's your trousers?" Gandhi laughed heartily and quipped: "You people wear plus-fours, mine are minus-fours." Without an iota of doubt, humour has the ability to generate dignified laughter which cheap jokes can't. In this regard, I recall two incidents. Attracted by the physical looks of her boyfriend, my cousin and her boyfriend decided to marry, but it was important to get the nod of their parents. One day, on finding her mother in a jovial mood, she implored: "Mom, I'm in love with a charming handsome boy who is ready to put the whole earth under my feet." Mother listened and said: "My child, earth is already there. Can he put a roof over your head?"

The other incident was when I attended a seminar which was to be addressed by a dignitary. When he failed to turn up, the organisers asked an elderly university professor to take his place. The professor was greatly amused and began his speech so: "At the very outset, I thank the organisers to make it known that I am a potato-speaker. You all know that we make potato dish when no other vegetable is available." This had the audience in splits.

Sense of humour is a quality that separates great men from ordinary mortals, whether he was Einstein or Mahatma Gandhi or the Dalai Lama. They have displayed it even in the worst crisis. Recently, when a reporter asked the Dalai Lama what thing about humanity surprised him the most, he remarked: "Man, because he sacrifices his health in order to make money and then sacrifices his money to recuperate his health. He lives as if he is not going to die and then he dies having never lived."

The lesson: Let us develop a healthy sense of humour rather than the art of having fun at the expense of others.

सम्पादकिय

मध्यम आय वर्ग और मोदी सरकार

मुझे एक पुरानी बात याद आती है। एक व्यक्ति को ईश्वर की कृपा से बहुत अच्छी पत्नी मिली हुई थी जो कि उसके लिये हर तरह से सुखकारी थी और उसके प्रति पूरणरूप से समप्रित थी। अभी उसकी शादी को कुछ ही समय हुआ था कि उस मूर्ख ने सोचा कि यह तो मेरी है ही क्यों न इधर उधर भी हाथ मारा जाये। यही नही ा , उसने दूसरी औरतो को पाने के लिए अपनी पत्नि की अबहेलना करनी प्रारम्भ कर दी। उसकी बुद्विमान पत्नि को पता लग गया और उसने उस स्वार्थी व्यक्ति से दूर होना प्रारम्भ कर दिया। इसका परिणाम बताना आवश्यक नहीं, आप सभी जानते हैं। जिनके पीछे वह घूम रहा था वे तो पहले से ही किसी न किसी के साथ थी, उन का तो आने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता था पर वह जो उसकी अपनी थी उसको भी उसने खो दिया। यह हाल है हमारी इस सरकार का जो कि मध्यम आय वर्ग के जबरदस्त समर्थन से आई थी और वही वर्ग इस सरकार की मध्यम आय वर्ग विरोद्धी नीतीयों के कारण इस से दूर हो गया है।

सब से पहले समझना होगा मध्यम आय वर्ग कौन है। मध्यम आय वर्ग वे हैं जो अपनी मेहनत द्वारा जीवन की अच्छी सहूलतें अपने लिये और अपने बच्चों के लिये प्राप्त करना चाहते है। इसके लिये वे कुछ भी करने को तैयार रहते हैं। इस में निम्न और उचच वर्ग दोनो आते है।इस वर्ग की संख्या भारत में बहुत तेजी से बढ़ रही है। खास बात यह है कि यह किसी खास समुदाय या जाति नहीं हैं। इस में सभी जातियों और वर्गो के लोग हैं जो जीवन में आगे आना चाहते हैं। हमारे राजनैतिज्ञ तो गाांधी जी द्वारा कही आज से 80 साल पहले वाली बात दौहराते रहते हैं कि भारत गांवो में बसा है हमे गांवो को आगे ले जाना है। पर सच्चाई यह है कि आज आगे बढ़ने वाले नवयुवक और नवयुवतियां शहरों में ही अपना भविश्य ढूंढ रहे हैं। गांव जहां नाम के स्कूल और अस्पताल हैं इनकी आंकशाओं को पूरा नहीं कर सकते। इस लिये यह लोग तेजी से शहरों की और भाग रहें हैं और कुछ समय बाद मध्यम आय वर्ग का हिस्सा बन जाते हैं। मै समझता हूं 2050 तक भारत का 60% आवादी इस वर्ग में होगी। और जो भी रातनैतिक दल इस वर्ग को पकड़ कर रखेगा वह राज करेगा।

जतनी सहूलतें आज के समय में इस वर्ग को चाहिये उतनी शायद किसी और वर्ग को नहीं। कारण, यह वर्ग प्रगतिशील है । यही वर्ग है जो कि अपनी मेहनत द्वारा यह उंची इमारते, सडके और आलीशान ईमारते, होटल और दूसरे व्यवसाईक भवन और मोल इत्यादी बना रहा है। ये लोग अपने और बच्चों के जीवन को और` अच्छा बनाने के लिये पैसे खर्च रहें है। अच्छे से अच्छे स्कूल में बच्चे को भेजना चाहते है। बच्चों की सेहत पर सूचना के साधनों पर पैसा खर्च कर रहें है। और यही बच्चे आगे चल कर देश को आगे ले जायेंगे। इस लिये समझदार सरकार वही है जो इस का खयाल रखेगी। आम आदमी पार्टी जब बनी थी तो इस सोच के काफी नजदीक थी और यही कारण था कि उसे बहुत हद तक ऐसे ही लोगों का समर्थन मिलने लगा पर गलत नेतृत्व के कारण आज आम आदमी पार्टी भी दूसरी पाटीयों के नक्शे कदम पर है।

मौजूदा सरकार ने पिदले दो सालों में जो भी कदम उठाये वे सब मध्यम आय वर्ग विरोद्धि है। यह भी सत्य है कि यह सरकार आम सहमती की बजाये दो तीन लोगों द्वारा चलाई जा रही है और उस में मुख्य है श्री अरूण जेटलीं। जो भी कदम उन्होने पिदले दो साल में उठायें हैं वे मध्यम इाय वर्ग के हक में नहीं और कई बार तो ऐसा लगता है कि यह वर्ग उनकी घृणा का पात्र है। इसके कुछ उदाहरण हैं

1 उन्होने बेंको में जमा की जा रही Fixed deposit राशी पर ब्याज दर तो कम की ही पर भविश्य निधी PPF पर भी ब्याज दर कम कर दी जब की भव्शिय निधी तो आम व्यक्ति के बुढ़ापे की आय का साधन होता है। यही नही कर्मचारियों द्वारा अपनी ही भव्शिय निधी निकालने पर अनावश्यक कानून बना दिये। हैरानगी की बात तो यह है कि लोक सभा के सदस्यों ने अपने वेतन को दुगना करने का बिल , जिसका सारा भार इसी वर्ग पर पड़ेगां वह तो बिना किसी विरोध के पास कर दिया है केवल प्रधान मन्त्री के अनुमोदन की देरी है, पर जब आम जनता की बात आती है तो उनकी बुढ़ापे में होने वाली आय पर सभी प्रकार के अुकुश लगाये जा रहें है।

यह सरकार जो कुछ भी सहुलतें दे रही है वह जाति के आधार पर दे रही है और खास वर्गो को दे रही है। ऐक बात सपश्ट है कि इस सरकार यह मान कर चल रही है कि मध्यम आय वर्ग तो हमारे साथ ही है और रहेगा भी। पर यह इस की भ्रान्ति है, जो कि आगे आने वालों चुनावों में सामने आ जायेगा।

शेष पृष्ठ 8 पर

प्राचीनकाल में भारत के लोग निराकार ईश्वर की स्तुती ही किया करते थे

उत्पलदेवा काश्मीर में पैदा दुये दार्षनिक थे। उनके लिखे हुये ग्रथं दस बात को दोहराते हैं कि प्राचीनकाल में भारत के लोग निराकार ईश्वर की स्तुती ही किया करते थे। वे अपनी पुस्तक में लिखते हे सर्वव्यापक जब आपकी हर चीज ही आपको दर्शाती है, तब हर स्थान , घरती का एक एक कण आपका मन्दिर है। ऐसे में मैं केहां पर आपका मन्दिर बना सकता हूं। आपका नाम लेना ही सुख और परमआन्नद है जब कि आपको न याद रखना दुख का कारण है। इस को वही महसूस कर सकता है जो कि आपको उपासना द्वारा प्राप्त करता है। वही आपको प्राप्त कर सकता है जो कि अपने सभी कार्य आपको सर्मपित करता है।

अक्सर हम पढते है कि बहुत से मन्दिरों में महिला प्रवेश वर्जित है और दूर दुर्गम स्थानों पर बनायें गये है। क्या आप न्यायकारी ईश्वर से यह उमीद कर सकते है कि अपने कुछ बच्चों को तो आने दे और कुछ को नहीं और अपना घर ऐसे दुर्गम स्थान पर रखे जहां उसके चाहने वालों को पहुंचना कठिन हो। आखिर महिलायें और पुरूष दोनों ही उस के बच्चे है। तो फिर ऐसा क्यों।

इस का उतर यही है कि प्राचीनकाल में भारत में मन्दिर थे ही नहीं। यह सभी मन्दिर पिछले तीन हजार वर्षों में बने जब कि वेदों का सही रूप लोभी व स्वार्थी ब्राहमण पण्डितो ने बिगाड़ दिया। उन्होने ही ईश्वर को लिंग दिया और उन्ही ने उसको दूर दराज जगाहों पर फेंक दिया और उन्ही ने उसे ऐसा पेश किया जैसे उसे महिलाओं से उसे नफरत हो।

मुझे बहुत हैरानी होती हैं जब मैं बहुत सी आर्य समाजी सस्थाये आयोघ्या में राम मन्दिर बनाने की मोहिम में बड़ चड़ कर आगे आती है। यह इस लिये हो रहा है कि आर्य समाज अपने रास्ते से भटक चुका है, यह दयानन्द का आर्य समाज नहीं बल्कि संसकृत समाज बन चुका है जिस का संचालन भारतीय जनता पार्टी इन गुरूकुलों और संस्कृत के पण्डितो द्वारा कर रही है। एक हवन करने से आप दयानंद के अनुयाई नहीं बन जाते। हवन तो हिन्दुओं के सभी मत करते है।

10वी शताब्दी में जब शंकराचार्य बनारस में काशी विश्वानाथ मन्दिरं गये तो अगले ही पल वह पश्चाताप में डूब गये और बोले———हे ईश्वर मुझे क्षमा का रुना। यह जानते हुये भी कि आप सर्वशक्तिमान हैं मैं काशी आप के दर्शन करने चला आया।

यदि आप महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश पढ़े तो ईश्वर के बारे में आपके बहुत से संशय दूर हो जायेंगे। आपको वह पुस्कत चाहिये हो आप मुझे सूचना दें। मैं आपकें तक निशुल्क पहुचाउंगा।

पृष्ठ 7 का शेष

मेरा यह मानना है कि सरकार का सब से अधिक ध्यान काम की तलाश मे गावो से शहरों की तरफ तेजी से आ रहे विशाल जनसमुदाये की तरफ होना चाहिये। उनको रहने को सस्ते मकान, अच्छे स्कूल, सुरक्षा और स्वास्थय की सुविधायें कम खर्च पर उपलब्ध हों। हमारी सरकार गाांवों पर पैसा तो खर्च कर रही है पर उसका कोई खास फायदा नहीं हो रहा कारण आज आज गांवों में शहरों की अपेक्षा कहीं अधिक लोभ और लूटपाट का बोलवाला है। एक ही मकस्द बन गया है सरकार को किसी भी तरह लूटो। सभ्यता बहुत गिर चुकी है। आप वहां पर सुरक्षित महूसूस नहीं करते।वह दिन अब खतम हो चुके हैं जब गावों के व्यक्ति सीधे, भोले और शरीफ होते थे। काम न होने की बजह से वहां दुराचार तेजी से फैल रहा है । इस लिये अगर शहरीकरण हो रहा है तो अच्दी बात है। सरकार उस में सहायता करे। खेती बाड़ी गांव में रह रहे सभी की आंकशओं को पूरा नहीं कर सकती। यह केवल 20% को अच्छा जीवन दे सकती है वह भी जिनके पास बड़ी होलडिंग है। इस लिये सरकार की नितीयां मध्यम आयवर्ग के हक में होनी चाहिये न कि विरोद्व मे। उदाहरण के लिये अगर सस्ती बिजली देनी हो , जैसे की 200 युनिट मुफत तो वह सभी को उपलब्ध हो न कि जाति या फिर व्यवसाय के आधार पर किन्ही खास वर्गो को, जैसा कि दिल्ली में केजरीवाल ने किया।

Mistakes are Opportunities to Learn Something New

We have all heard about the spilt milk story. We also know that there is no use crying over spilt milk. But this story is different. Let us hope all parents would respond in this manner.

There is a story about a famous research scientist who had made several very important medical breakthroughs. He was interviewed by a newspaper reporter who asked him why he thought he was able to be so much more creative than the average person. What set him so far apart from others?

He responded that it all came from his experience with his mother when he was four years old. It all happened like this----"I tried to take out a bottle of milk from the refrigerator when I lost my grip on the slippery bottle and it fell, spilling its contents all over the kitchen floor – a veritable sea of milk!

When my mother came into the kitchen, instead of yelling at me or giving me a lecture or punishing me, she lovingly took me in her lap and said, "Robert, what a great and wonderful mess you have made! I have rarely seen such a huge puddle of milk. Well, the damage has already been done. Would you like to get down and play in the milk for a few minutes before I clean it up?"

Indeed, I played in the milk for some time. After a few minutes, my mother said, "You know, Robert, whenever you make a mess like this, eventually you have to clean it up and restore everything to its proper order. So, how would you like to do that? We could use a sponge, a towel or a mop. Which do you prefer?"

I implusively chose the sponge and with my mother did that act of cleaning up the spilt milk.

Enjoying my act with little hands my mother then said, "You know, what we have here is a failed experiment in how to effectively carry a big milk bottle with two tiny hands. Let's go out in the backyard and fill the bottle with water and see if you can discover a way to carry it without dropping it."

There I learnt that if I grasped the bottle at the top near the mouth with both hands, I could carry it without dropping it. What a wonderful lesson!

This renowned scientist then remarked that it was at that moment that I learnt that I need not be afraid to make mistakes. Rather mistakes were just opportunities for learning something new, which is, after all, what scientific experiments are all about. Even if the experiment "doesn't work", we usually learn something valuable from it.

Wouldn't it be great if all parents would respond the way Robert's mother responded to him?

Never committing any mistakes means never to have tried anything new. Don't be afraid to commit mistakes,but never repeat the same mistake again. If we do so, that means we have not learnt anything from our mistakes. Try something new, something different, something you have never done before.

Thomas Alva Edison has been reported to have made this famous statement when a thousand prototype of his light bulb failed to work before he created one that worked. "It was not a failure. I learnt a thousand different ways in which a light bulb doesn't work."

Great Loves And Great Achievements Involves Great Risk

Take Risk : If You Win, You Will Be Happy ; If You Lose You Will Be Wise.

Intelligent People Are Those Who Learn From Their Mistake, But Wise People Are Those Who Learn From Other's Mistake.

Therefore, We Must Learn All We Can From The Mistake Of Other. We Wont Enough Time To Make Them All Over Selves.

Never Mistake Knowledge For Wisdom. One Helps You Make A Living; The Other Helps You Make A Life.

An idiotic Perception Of Our Media.

Media must know what the interfaith marriage is

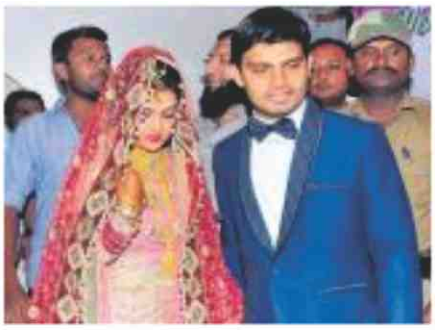

Recently our media went all out to highlight a marriage in Karnatka in which a Hindu girl after converting to Islam married a Muslim boy. It was declared as Interfaith marriage in which secularism and true love emerged victorious, according to our media and intellectual brigade..

Editor's comments.

Once the girl is converted, it's no longer an interfaith marriage. It would have been an interfaith marriage if the girl as a Hindu without conversion had tied knot to the Muslim boy.

It's not even victory of love as boy got the girl converted. True love is unconditional and sans religions.This marriage is not triumph of Secularism, but a blot on secularism.

For a munute, even this will be accepted if we see a Hindu boy/girl marrying a Muslim girl/boy and their marriage in a Hindu religious way is accepted by their Muslim parents. But, I'm sure in that case our media would have said, **"Secularism in India at vanishing point".**

Interfaith marriages are those where partners chose to have their religion unchanged, though editor is not a votary of this. I wish our media learns this elementary thing and stops making fool of the public.

दुख और असफलता भी आपकी गुरू है

गुरू उसको कहा गया है जो कि अपको रास्ता दिखाता है। अगर इस परिभाशा को मध्य नजर रखें तो दुख और असफलता भी आपकी गुरू है, कारण जितना कुछ व्यक्ति दुख और असफलता से सीखता है, शायद उतना किसी और से नहीं। अगर आप अपने जीवन को टटोल कर देखेंगे तो शायद मेरी बात आपको ठीक लगे।

कोई भी असफलता हमें एक चिन्तन की अवस्था में ले आती है। इस चिन्तन में व्यक्ति अपने द्वारा किये गये कार्य का अवलोकन कर्ता है और ऐसा करते हुये अपनी उन गलतियों को ढूंढ लेता है जिस कारण की वह असफल हुआ। चिन्तन वैसे ही है जैसे कि गुरू से बातचीत करना। अगर आप चिन्तन नहीं करते हैं तो मैं नहीं सोचता बाहर वाले व्यक्ति भी आप की सुधार की प्रकिया में कोई अधिक सहायता कर सकते हैं। यह भी सत्य है कि जब हम कारण और नया रास्ता ढूंढ लेते हैं तो हम दुख और असफलता को भूल जातें हैं और हम में उस कार्य को पुन्ह करने का नया उत्साह उमढ़ पड़ता है।

जो व्यक्ति दुख और असफलताओं से उभर कर उपर उठता है उसका नजरिया लोगों को समझने और उनका समाधान करने में दूसरे व्यक्ति से अलग ही होता है। संवेदनशीलता, करूणा उसमें स्वभाविक तौर पर होती है। महात्मा गांधी का एक नेता के रूप मे सफलता का मुख्य कारण यह था कि उन्होने जिन्दगी को आम लोगों के आईने से देखा था। दक्षिण अफ्रिका में उनका जीवन सुगम या आरामदायक नहीं था। बहुत बार दुखों से, असफलताओं से, दूसरों द्वारा की गई जयादतीयों ये गुजरना पढ़ा, पर वह चिन्तक थे और लेखक भी। उसी चिन्तन ने उन में संवेदनशीलता जैसा गुण पैदा कर दिया और वह ऐसे नेता बने जिन्हें सब ने सराहा। दुख एक तोहफा भी हो सकता है, जैसे कि श्री रविन्द्र नाथ टैगोर के यह शब्द ब्यान कर रहे हैं,

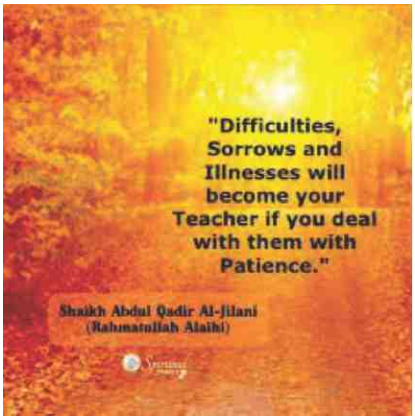

Tagore in Gitanjali says, "I had let my mind remain engrossed in worldly affairs; in the name of pleasure what I got was only sorrow; but what you offered in the name of sorrow was actually joy". जिन्दगी के कार्यों में डूबा जिन को मैं आनन्द की अनूभूती देने वाला समझता रहा, वे तो वास्तब में दुख देने वाले निकले। और जिन्हें मैं दुख समझता रहा वे सुख देने वाले साबित हुये।

आज जो हमारे नेता हम पर राज करते हैं, उन में बहुत से दुंख के दौर से नहीं गुजरे होते जिस कारण वे लोगों की समस्याओं को ठीक तरह समझ नहीं पाते और इस कारण उन के बहुत से निणर्य आम जनता के हक में नहीं होतें। पडित जवाहर लाल की पुत्री श्रीमती इन्दिरा गाधीं लगभग 11 वर्ष तक हमारे देश की प्रधानमन्त्री रही। उन की सब से बड़ी खूबी गरीबों के प्रति संवेदनशीलता थी। इसी ने उन्हें सफल बनाया।

नई पीढ़ी और उन के माता पिता के लिये सब से बड़ी शिक्षा यही है कि बच्चों को संघर्श करने की आदत डालें। दुखों और असफलताओं कों अपना गुरू बनायें। वे तप कर सोना बन कर निकलेगें। वरना हो सकता है वे वह न बनें जो बन सकते थे। जरा मुड़ कर देंखें क्या आपका जीवन इतना सुगम था जितना की आप ने अपने बच्चों का बना दिया है। और यह सुगम जीवन जीने की आदत बहुत बार उनका शत्रु बन जाती है।

Vedic Theory of Karm Fal

Dr. Vikram Kumar Viveki

As you sow, so shall you reap. That is the Vedic Theory of Karm Fal. All our happiness and miseries are the consequences of our actions. Our good action earns us happiness and a bad action earns miseries. That is done under God's justice system. There is no escape from the results of our actions. No Jyotishi, no pandit, no prayer and no bribe can save you from the good & bad effects of your good or bad deeds. God is omnipresent and omniscient. So he knows exactly what we do. He is just and does only justice. God knows even what we have in our minds because he is present in our minds too.

A good deed is defined as the one that gives happiness to someone else and a bad deed is the one that gives miseries to others. So to be happy yourself you have to give happiness to others. That is the only way and there is no other way to be happy. So remain always prepared and make special efforts to give happiness to others.

Many people blame their luck for any problem or trouble as if luck is something imposed by God on them. But that is not true. Luck is your earnings. You did some bad deed in the past and now you are bearing its fruit. Similarly when you are happy it means you did some good deed in the past and now you are enjoying its fruit.

God keeps account of all our actions. Some of our actions are immediately rewarded and others are returned to us at an appropriate later date This later date stuff is called luck by us. You worked at your work place for a week. At the end of the week you got paid wages for your work. You put those wages in the bank. Those wages lying in the bank are your luck. You earned that luck. You may use it immediately or later depending up your need and will.

Some people blame time for any mis-happening. They say that time was bad that is why it so happened. If that is true them no person should be blamed for any crime. Only time should be blamed. But this is not the case. Time is known because of the incident and the incident is not known because of the time. Year 1947 in India is known for the independence of the Country. The independence of India is not known because of the year 1947.

Some of our actions of this life are rewarded in this very life and others are carried to be rewarded in later lives. Similarly, some actions of our previous lives are rewarded in this life. All depends upon the opportunities. According to the Vedas this life is not the only life we get. There is life after every death. Soul is immortal. It never dies, nor it is ever born. At death God moves it from one body to the other.

One thing more to understand is that our good and bad deeds do not cancel each other. There are separate accounts for good and bad deeds. We must bear fruit of good and bad deeds separately.

The birth we get is the sum total of all our unrewarded deeds in our previous lives. One is born to poor parents and other to rich parents. One is born as a human being and the other as an animal. This difference is due to the difference of deeds of different people. All variations we see in the world are due to the variations of actions of various people.If we do some good or bad deed with our body then our body has to bear its consequences. If we do that with our mind then the mind gets the result. Similar is the case with speech. A question arises – if we have to bear the consequences of our actions then why we should pray to God. The answer is that the purpose of prayer is not asking or requesting for pardon. As a matter of fact God does not pardon any body.

If he pardons people for their crimes then there will be no justice. Moreover, the crime graph will shoot up to bring much more miseries all over. The purpose of prayer is to remember that there is a super power God who does punish or reward us exactly according to our deeds. By knowing that, we can avoid doing bad deeds. Secondly, we recite God's qualities like truthfulness, kindness, justice etc.lives.One thing we can do relating to our bad deeds is to think about their consequences and not to do such deeds again.

so that we could adopt those qualities in our That is called repentance. Repenting does not save us from the consequences of our past bad deeds. It helps train us not to repeat such deeds in future.

Heaven and hell are not particular places. One who is in a stale of extreme happiness is said to be in heaven and the one who is in a state of extreme miseries is said to be in hell. All depends upon one's actions.

Ex-Head of Department of Sanskrit

Ex-Chairman of Dayanand Chair for Vedic Studies

Panjab University, Chandigarh, India

समाजिक बुराईयों को दूर करने में पाकिस्तान सरकार हमसे आगे

खर्चीली शदियों पर लगाई रोक

खर्चीली शादियों पर रोक लगाते हुये पाकिस्तान सरकार ने निम्न नियम बनाये

1 आतिशबाजी पर पूरी तरह प्रतिबन्ध

2 दहेज का किसी तरह का प्रदर्शन नहीं

3 बारात को दिये जाने वाले खाने में केवल एक ही पकवान होगा।

अगर इस का उलंघन किया जाता है तो सख्त र्दड का प्रवधान किया गया है। सारा मकसद यह है कि शादियों को कम से कम खर्चीला बनाया जाये ताकि आम आदमी इस अनचाहे बोझ से बाहर लिकले, और यही पैसा जीवन के बुनयादी ज़रूरतों पर खर्चा हो। क्या हमारे देश में भी ऐसी सोच पैदा हो सकती है। मैं समझता हूं कि नहीं। देश की स्वतन्त्रता के कुछ वर्ष बाद तक हमारे नेता जो की गाधीं जी के साथ काम कर चुके थे सादगी के बारे में सोचा करते थे। आज तो कोशिश की जाती है कि कैसे हम व्यवसाईकता को अधिक से अधिक बढ़ावा दें। शायद ही कोई राजनेता ऐसा है जो आम व्यक्ति की मुसिबतों के बारे में सोचता हो।

पुस्तक

(English book of short stories)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी व विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपी 70 कहानियों का संग्रह एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका नाम है Our musings। इसकी कीमत 150 रूपये है।
जो भी इसे लेने के इच्छुक हों वह मात्र 100 रूप्या भेज कर या हमारे किसी भी बैंक ऐकांउट(Bank Account) में पैसे डाल कर मंगवा सकते है। भेजने का खर्चा हमारा होगा। Account Nos वही हैं जो वैदिक थोटस पत्रिका के लिये है।

मंगवाने से पहले निम्न बातों का कृपया ख्याल रखें
पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। Book is in English
कहानियां धार्मिक नहीं परन्तु जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ी है। Stories are on various aspects of human life.

नीला सूद, भारतेन्दु सूद
0172–2662870, 9217970381

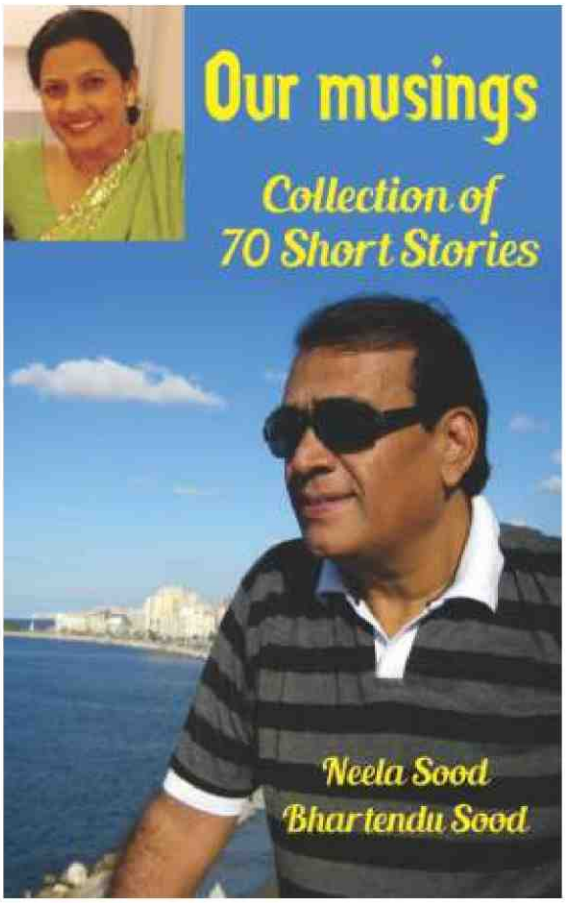

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

प्रत्येक व्यक्ति पांच शक्तियों से बिभुशित है
1 शारीरिक बल
2 इच्छा शक्ति.–– Will power
3 विवेक–––अच्छे बुरे में फर्क देखने की शक्ति capacity to discriminate between good and bad
4 आत्म शक्ति या आत्म बल
5 बोलने की शक्ति

वही व्यक्ति निश्काम भाव से कर्म करने के समर्थ है जो इन पांच शक्तियो के ठीक प्रयोग में सक्षम है। अर्थात बुद्धि स्थिर तथा सुमति से युक्त है। वाणी मधुर है व इसका उतना ही प्रयोग किया जाता है जितना आवश्यक है। आत्मा ज्ञान की ज्योति से ज्योतिर्मय है। दृढ़ संकल्प है व शरीर में रास्ते में आने वाली बाधाओं से जूझने का शक्ति है।

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA
D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab
Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465
Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

दमन नहीं संयम है सूत्र साधना का

सीताराम गुप्ता

आपने धातु की कमानी अथवा स्प्रिंग तो अवश्य देखा होगा। यदि हम उसको दबाते हैं तो जब तक हम उसको दबाए रखते हैं तब तक तो वह दबा रहता है लेकिन छोड़ते ही तेज़ी से उछलता है और अपनी पूर्वावस्था में आ जाता है। यह बाहरी दबाव स्थायी नहीं होता। यदि उसको स्थायी रूप से दबाना है तो उसे तपाना होगा और तपाने के बाद उसे मात्र उतनी देर दबाना पर्याप्त होगा जब तक वह ठंडा नहीं हो जाता। इसी प्रकार हमारी दमित इच्छाएँ भी बार–बार सिर उठाती हैं। यदि मन ही उचित साधना कर ली जाए तो बार–बार इंद्रियों के दमन की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी और हम बार–बार होने वाली पीड़ा से बच जाएँगे।

राम–रावण युद्ध से पूर्व विभीषण चिंतित होकर राम से पूछते हैं कि न तो आपके पास रथ है और न तन की रक्षा के लिए कवच और न जूते ही तब रथ पर सवार बलवान वीर रावण को कैसे जीता जाएगा? राम कहते हैं कि जिस से विजय होती है वह दूसरा ही रथ होता है और उस रथ की व्याख्या करते हुए राम कहते हैं :

अमल अचल मन त्रोन समाना।
सम जम नियम सिलीमुख नाना।।

संसार रूपी युद्ध को जीतने के लिए निर्मल और स्थिर मन तरकश के समान है। शम अर्थात् मन का वश में होना तथा यम और नियम ये बहुत से बाण हैं। इनके समान विजय का दूसरा उपाय नहीं। मन पर नियंत्रण का अर्थ भावों का दमन नहीं अपितु उनका परिष्कार करना है। उदात्त मूल्यों से युक्त सकारात्मक भावों द्वारा ही सतही या अनुपयोगी व घातक भावों से मुक्ति संभव है। सकारात्मक भावों के विरोधी भावों से बचाव भी आवश्यक है। इसके लिए सकारात्मक भावों को दृढ़ से दृढ़तर करते जाना अनिवार्य है। यही वास्तविक विजय है। यही साधना है। साधना ही विजय है।

साधना का सूत्र दमन नहीं संयम ही है। वास्तव में जब हम साधना की बात करते हैं तो दमन से

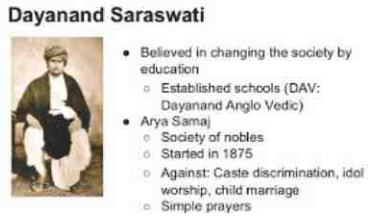

विरत होने की बात ही करते हैं। यदि हम कहें कि संयम ही साधना है तो अत्युक्ति नहीं होगी। प्रश्न उठता है कि साधना क्या है और इसकी क्या ज़रूरत है? विकारों अर्थात् संचित कुसंस्कारों तथा अवांछनीय आदतों व मान्यताओं का उन्मूलन ही साधना है। लेकिन मात्र विकारों के उन्मूलन से साधना पूर्ण नहीं होती। जो कुसंस्कार निकल जाएँ उनके स्थान पर सुसंस्कारों की प्रतिस्थापना अथवा रिप्लेसमेंट भी अनिवार्य है। साथ ही हमारे अंदर जो अच्छे संस्कार हैं वो भी किसी भी हालत में खिसकने न पाएँ वरना उनके स्थान पर संभव है ग़लत संस्कार या विचार आकर डेरा डाल लें और हमारी साधना बेकार हो जाए। यदि संक्षेप में कहें तो नकारात्मकता के स्थान पर सकारात्मकता का प्रतिस्थापन तथा संचित सकारात्मकता का बचाव ही साधना है। साधना के लिए स्वयं से संघर्ष करना पड़ता है लेकिन ये बाहरी संघर्ष नहीं आंतरिक संघर्ष होता है।

हमारे व्यवहार के मूल में हमारे विचार ही होते हैं और विचारों का उद्गम होता है हमारा मन। वास्तव में मन की साधना ही वास्तविक साधना है। जब हम संयम की बात करते हैं तो मन के संयम की ही बात होती है। मन का दमन नहीं होता। दमन इंद्रियों का होता है। क्योंकि मन इंद्रियों का स्वामी है अतः मन के संयम द्वारा इंद्रियों को वश में करना सरल है। यदि मन वश में नहीं है तो इंद्रियों को उनके कार्य से रोकना असंभव है। मन की साधना के बिना इंद्रियों को रोकना ही दमन कहलाता है। दमन पीड़ाकारक होता है जबकि संयम से दुख की अनुभूति नहीं होती है अतः संयम ही श्रेयस्कर है।

जहाँ तक दमन की बात है दमन कभी भी स्थायी नहीं हो सकता। साथ ही दमन की प्रक्रिया के साथ विरोध भी प्रारंभ हो जाता है। यदि कोई सरकार दमन की नीति अपनाती है तो उसका विरोध भी ज़रूर होता है। और एक दिन उस सरकार का ही सफाया हो जाता है अतः दमन ठीक नहीं। हमारी भी यही स्थिति है। मान लीजिए मैं आम खाना चाहता हूँ लेकिन मैं आम खाने की अपनी इच्छा का दमन कर देता हूँ तो मुझे इस कारण काफी बेचैनी रहेगी। यही बेचैनी मेरे दुख का कारण है। यदि आम खाने की इच्छा का दमन न करके वह इच्छा ही समाप्त कर दी जाए तो दुख नहीं होगा और यह संभव है मन के संयम द्वारा। इच्छाओं की पूर्ति के अभाव में दुख होता है अतः मन में इच्छाओं को न पनपने दें और यह संभव है मन के निग्रह अर्थात संयम द्वारा। संयम वस्तुतः मानसिक होता है जबकि दमन भौतिक। संयम पूर्णतः आंतरिक भाव है जबकि दमन बाह्य प्रक्रिया। दमन से हिंसा तथा अन्य विकारों की उत्पत्ति होती है जबकि संयम से अनुशासन और अहिंसा का उदय होता है।

जीवन में संयम का प्रादुर्भाव कैसे हो इसी का उत्तर है साधना। साधना द्वारा संयम का विकास संभव है। साधना भी सरल नहीं लेकिन उपाय स्थायी है। साधना को तप भी कहते हैं। तपना और तपाना शब्द गरम होना या गरम करना के अर्थ में भी आते हैं। जिस प्रकार लोहे या अन्य धातुओं को अपेक्षित तापमान पर गरम करके पिघला लिया जाता है और फिर उसे अपेक्षित साँचे में ढालकर मनचाहा आकार दे दिया जाता है उसी प्रकार साधना में इच्छाओं को मन चाहा आकार दे दिया जाता है। इच्छाओं का त्याग अथवा सात्त्विक इच्छाओं की उत्पत्ति साधना द्वारा ही संभव है। इससे मन और इन्द्रियों में द्वंद्व समाप्त हो जाता है। द्वंद्व की समाप्ति ही वास्तविक उपचार है। यही साधना है।

आपने धातु की कमानी अथवा स्प्रिंग तो अवश्य देखा होगा। यदि हम उसको दबाते हैं तो जब तक हम उसको दबाए रखते हैं तब तक तो वह दबा रहता है लेकिन छोड़ते ही तेज़ी से उछलता है और अपनी पूर्वावस्था में आ जाता है। यह बाहरी दबाव स्थायी नहीं होता। यदि उसको स्थायी रूप से दबाना है तो उसे तपाना होगा और तपाने के बाद उसे मात्र उतनी देर दबाना पर्याप्त होगा जब तक वह ठंडा नहीं हो जाता। इसी प्रकार हमारी दमित इच्छाएँ भी बार–बार सिर उठाती हैं। यदि मन ही उचित साधना कर ली जाए तो बार–बार इंद्रियों के दमन की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी और हम बार–बार होने वाली पीड़ा से बच जाएँगे।

लेकिन मन को साधना भी तो सरल नहीं। कृष्ण जब अर्जुन को कहते हैं कि मन के निग्रह द्वारा ही सब संभव है तो अर्जुन यही शंका व्यक्त करते हैं कि मन का निग्रह करना तो बहुत कठिन है। कृष्ण कहते हैं मुश्किल तो है पर असंभव नहीं। अभ्यास और वैराग्य से इसका निग्रह संभव है। संक्षेप में कहें तो कहीं भी किसी समय भी जब भी अवसर मिले शांत स्थिर होकर बैठ जाएँ और आँखें बंद कर लें। शरीर को निरंतर शिथिल या प्रशांत करते चले जाएँ। धीरे–धीरे मन निर्विकार होना प्रारंभ हो जाएगा। जितनी गहन अवस्था में पहुँच पाओगे उतना ही अधिक लाभ होगा। जीवन में जो चाहते है मन की इसी अवस्था में दोहराएँ या वह भाव अपने मन में लाएँ। वह भाव जीवन की वास्तविकता में परिवर्तित हो जाएगा। ध्यानावस्था के उपरांत न केवल मन की चंचलता कम हो जाएगी अपितु इंद्रियों की तीव्रता भी कमज़ोर पड़ जाएगी। यही साधना है और यही वास्तविक संयम है और इसके लिए दमन या बाह्य उपचार नहीं मन की आंतरिक अवस्था या भाव ही पर्याप्त है। भावों को उचित आकार प्रदान करके ही हम सारी समस्याओं से निपट सकते हैं। भाव प्रदूषण से मुक्त होना ही संयम है और यही वास्तविक साधना है।

ए.डी.–106–सी, पीतमपुरा,
दिल्ली–110034 फोन नं. 09555622323
Email: srgupta54@yahoo.co.in

हिन्दु धर्म को मुसलमानों से नहीं, जातिवादं से है खतरा

भारत को आजाद हुए भले ही 68 साल बीत चुके हैं लेकिन अभी भी यह देश जातिवाद जैसी सामाजिक बुराइयों से जूझ रहा है। कम होने की बजाये यह बढ़ती जा रही है। पंजाब के फगवाड़ा शहर में तो इस जातिवाद का जहर मरने के बाद भी लोगों का पीछा नहीं छोड़ता। फगवाड़ा के क्षेत्र हदिआबाद में अलग–अलग जातियों के लिए अलग–अलग शमशान घाट बनाये गए हैं। इस शमशान घाटों के सेवादारों का कहना है कि बरसों से इस इलाके में यही प्रथा चली आ रही है। कहने का अर्थ है मरने के बाद भी जातिप्रथा पीछा नहीं छोड़ती। एक साल पहले हरियाणा के हिसार जनपद के भगाना गांव में वहा° दलित समाज को किसी भी स्तर पर आशानुरूप सामाजिक न्याय नहीं मिल पा रहा था जिस कारण पहले वे घर छोड़ने पर मजबूर हुये और उस के बाद अब अपना धर्म छोड़ने तक का सफर भी तय करना पड़ा।

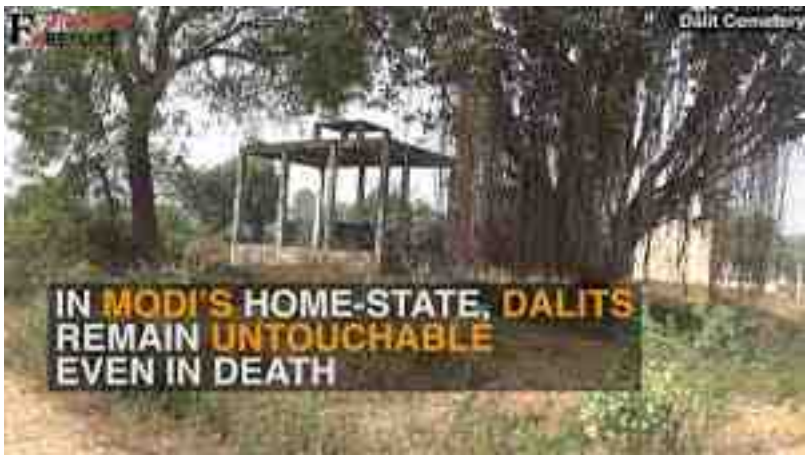

दिल्ली में जंतर–मंतर पर धरने में ही लगभग सौ दलित परिवारों ने हिन्दू धर्म छोड़ते हुए पूरे रीति रिवाज से इस्लाम धर्म को अपना लिया है जिसके बाद समाज की उस मानसिकता और हजारों वर्षों से भारतीय समाज में व्याप्त जाति व्यवस्था का यह गन्दा चेहरा भी सामने आया है। इस सबके बीच सबसे चिंता की बात यह है कि देश के किसी भी राजनैतिक दल या हिन्दु समुदाये के किसी भी मत की ओर से इन दलितों और प्रताड़ित किये गए वंचितों के प्रति कोई चिन्ता या संवेदनशीलता दिखाई नहीं दी! एक शंकराचार्य सांई बाबा के पीछे तो हाथ धो कर पीछे पडे हैं पर ऐसे स्थानों पर जा कर जो दलित धर्म परिवर्तन पर मजबूर है उन्हें क्यों नही यह विश्वास दिलाते कि आप हमारे हिन्दु धर्म के ही अटूट अंग है। यह कोई अकेली घटना नहीं है बल्कि सामाजिक स्तर पर रोजाना ऐसी घटनाएं हो रही हैं जिसमें जातिवाद कहीं सीधे तौर पर तो कहीं उसके द्वारा खड़ी की गयी सामाजिक जाति व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न लगता दिखाई देता है।

यही नहीं यदि हम सरहद पार चलें तो वहा° का हाल भी यही है। जगजीत सिंह पाकिस्तान के उन दलित हिंदुओं में से हैं जो भेदभाव से तंग आकर अपना धर्म बदलने पर मजबूर हुए हैं। जगजीत अपने परिवार के साथ सिंध प्रांत के रेगिस्तानी जिले थरपारकर के मुख्यालय मट्ठी में रहते हैं। 2005 तक जगजीत का नाम हंसानन्द था, लेकिन फिर उन्होंने अपनी पत्नी और बच्चों के साथ अपना धर्म छोड़ कर सिख धर्म अपना लिया। वे कहते हैं, 'मैं इस इलाके को छोड़कर नहीं जाना चाहता हूं और यहां बगावत की एक मिसाल के तौर पर रहना चाहता हूं।' जगजीत यहां तक दावा करते हैं कि पांच साल पहले ब्राहम्ण हिंदुओं ने उन पर कातिलाना हमला भी किया था। वे कहते हैं कि धर्म परिवर्तन करने से उन्हें मन की शांति मिली है। अब उनका बेटा दलित नहीं सरदार का बेटा कहलायेगा।

'पाकिस्तान हिंदू पंचायत' संगठन के महासचिव रवि दावानी कहते हैं, दलित समुदाय को हिंदुओं में गिना जाए तो समस्या नहीं होनी चाहिए। पाकिस्तान में हिन्दू अल्पसंख्यक अधिकारों की बात करना ऐसे ही लोगों की बात करने के बराबर है। लेकिन पाकिस्तान में दलित समुदाय के अधिकारियों के लिए काम करने वाले और राष्टपति पुरस्कार विजेता डॉक्टर सोनू खनगरियानी तस्वीर का दूसरा रुख दिखाते हुए कहते हैं कि हिंदू अल्पसंख्यकों को मिलने वाले अधिकार तो ब्राहम्ण ले जाते हैं। वे कहते हैं, 'इसमें कोई दो राय नहीं कि हमें इस देश में मुसलमानों से कोई खतरा नहीं, बल्कि खतरा ब्राहम्णों से है। यह हिन्दंओं में छुआछूत अकेले हिन्दुसतान में ही नहीं परन्तु जहां जहां भी हिन्दु हैं वे इस छूत के रोग को सब से पहले फैलाते है। क्या है यह हिन्दु धर्म गर्व करने योग्य?

हरियाणा के रोहतक जिले का हाल ही ले लिजीये। क्या इस जाट अन्दोलन के दौरान हिन्दुओं की सम्पति व घरों को मुसलमानों या ईसाईयों ने जलाय? यह हिन्दु ही थे। जातिवाद के भंयकर जहर का उदाहरण इस से बुरा क्या हो सकता है। 1947 में पाकिस्तान से आये हिन्दु अपने घर बार से उजड़ने का दोष जिन्हा पर थोपते हैं पर यहां तो जिन्हा नहीं थे । सच्चाई यह है कि यहां जिन्हा से भी खतरनाक व्यक्ति लोगों के जान माल से जाति के नाम पर खेल खेल रहे थे। 2016 में रोहतक के दृश्य 1947 में लाहोर के दृश्यों से भी अधिक कूरता का चित्रण कर रहे थे।वीर सावरकर की प्रसिद्द पुस्तक पिमोपलासि में मालाबार में हुए दंगों का सच दिखता है कि किस तरह केरल के अन्दर ब्राहम्णवाद के कारण ही इतना बड़ा अत्याचार हुआ और मूलवासी दलितों का शोषण होते आया है और जब मूलवासी आदिवासी इससे बचे न सके तो ईसाई और मुसलमान बनने पर मजबेर हुये। बहुत सी जगह आज भी दलितों को मन्दिर में प्रवेश की अनुमति नहीं है आस्था प्रार्थना तक में जातिगत शब्दों से तिरस्कार होता है किन्तु जब वे बहिष्कृत लोग धर्मपरिवर्तन कर लेते हैं तब धर्म के लोप का रोना रोया जाता है। सोचो आखिर जातिवाद क्या है इससे हमने अभी तक क्या पाया?

यह बहुत दंख की बात है कि इस जातिबाद को जीवित रखने में सब से बड़ी भूमिका हमारी सरकारों ने व शासकों ने निभाई जिन्होने जाति को सरकारी नौकरियों में आरक्षण का आधार बनाया। हमारा संविधान कहीं नहीं कहता कि जाति आरक्षण का आधार होना चाहिये।

संविधान तो केवल यह कहता है कि तो पिछ़ड़े लोग है और जिन को सरकारी नौकरियों में अनुपात के अनुसार नौकरियां नहीं है उन्हें नौकरियों का प्रवधान किया जाये। अनुछेद (16) 4

जाति को आधार तो हमारे शासको ने बनाया। जो 1953 में पिछ़ड़े लोग का चयन करने के लिये कमीशन बैठा था उसने जाति को आधार बना कर 2399 जातियों को पिछड़ा घाषित कर दिया।उस समय अगर हमारी सरकार ने कमीष्न से कहा होता कि जाति के स्थान पर आप दूसरा कोई आधार बनायें, जैसे कि आथिर्क हालात, शिक्षा आदि तो जातिप्रथा ऐसा कूर रूप धारण नहीं करती।

लोग पिछड़े वर्ग में आने के लिये एक दूसरे की जान लेने को त्यार हैं और धर्म परिर्वतन भी बुरा नहीं मानते। मजे की बात है कि जो राजनैतिक दल तैसे कि भारतीय जनता पार्टी 1990 में मंडल कमीशन की रिर्पोट के विरूद्ध खुल कर सामने आये थे वे इस को जिवित रखने में सब से आगे हैं। प्रधान मन्त्री जोर शोर से कहता है मैं पिछ़डे वर्ग का हूं। यही नहीं जब उनकी पार्टी को जनम देने वाली संस्था RSS के मुखिया ने कहा कि आरक्षण पर सोच देने की आवश्यकता है तो प्रधान मन्त्री ने जोर शोर से इसका खण्डन किया। अब तो अपनी कुर्सी के लिये कहते हैं कि जाति पर आधारित आरक्षण को तो बाबा अम्बेदकर भी नहीं बापिस ले सकते। सच्चाई यह है कि बाबा अम्बेदकर ने ऐसे आरक्षण की कभी बकालत नहीं की थी। यह तो बोटों के लिये हमारे रातनितिज्ञों की करनी है चाहे देश जल जाये या बंट जाये।

Catch them young

WG CDR DPS BAJWA

I BELIEVE that I am Jack of all trades but master of none, and yet I feel it is all worthwhile. Learning is a life-long process. We must teach our children everything possible that they ought to learn in their growing years. Some affluent parents think that children must get all that they seek, and the fleet of helpers are there to do everything for them. Young children must be encouraged to do their own work, so that as adults, they are not dependent on either their spouse or domestic help.

They must learn how to make their bed in the morning, keep clothes neatly in the closet, etc. As they advance in age, they must also learn how to cook and help in household chores.

Whenever I cut a fruit or paint a wall or tighten a screw, my grandchildren would come running, saying they wanted to do it too. I never shooed them away. It is better that they learn how to handle a knife or a paint brush early. Children imitate their parents and if they are allowed to participate, they grow into well-rounded personalities.

Most women lament that their husbands leave a wet towel on bed and carelessly throw about the clothes everywhere. Had this individual been groomed to tidy his own room as a youngster, he would have followed the habit as a grownup, too. I overheard a working woman say that she would marry a man who could provide her with a full-time cook.

This proves that cooking is becoming a phobia for the younger generation, more so when fast food is easily available.

I remember when I got my first bicycle, I cleaned it daily; even the spokes and the rim would shine. I felt proud riding the clean bike. Sure enough, that habit stayed with me, and even today, at the age of 71, I like to drive my scooter or car only if it is squeaky clean. I see youngsters who have all the time for their smartphones and computers, but never bother to wash their bike (including girls). A lady next door has been staying alone for many years for the sake of her only son's education. He is pampered to the hilt. Often, I see her clean his scooter and provide him everything on a platter. I wonder what kind of a husband or father this boy would make! On the contrary, when we visited my cousin, she called out, "Chhotu, beta get some tea, please." And behold, her teenaged son brought in tea and snacks for us.

Children need to be taught all life skills without being too kind to them. Besides teaching them swimming, driving, cooking, or some sports, they must also help parents in various chores. Buying vegetables/groceries, managing bank account, fixing a fuse, occasional cleaning of fan/toaster, etc. are some of the things the children can help out with.

Human being is the greatest asset

Nobel Laureate ***Shimon Peres*** *an iconic statesman who was President of Israel from 2007-14, when asked how he shaped the destiny of his country, his measured reply was,*

"We knew about what was against us. We had a tiny land with a desert in the south and swamps in the north. We didn't have a drop of water. We didn't have natural resources. We discovered that we really have nothing – and that is what made us great. Because when you have nothing, you discover you have something that is called a human being.

ईश्वर को मानना क्यों आवश्यक

महेश पोरवाल

एक व्यक्ति मुझे सफर के दौरान मिला। वात ईश्वर को मानने न मानने पर चल पड़ी। व्यक्ति काफी विद्वान और मननशील प्रतीत हो रहे थे, इसलिये मैने यही ठीक समझा कि खुद कुछ न बोल कर, उनके विचारो कों जानू।

उन्होने बताया कि उनके पिता जी, जो कि उस समय दुनिया में नहीं थे, बहुत योग्य, ईमानदार, साहसी व चरित्र के व्यकित थे। परन्तु न तो कभी वह ईश्वर के बारे में बात करते थे और न हीं मैने उनको कभी ईश्वर के नज़दीक होते देखा। इसके विपरीत मेरी मां ईश्वर को सर्वोपरी मानती थी। उसकी ईश्वर पर अटूट आस्था थी। दुख हो या सुख की घड़ी, ईश्वर को सब से पहले याद करती थी। मां जब 62 वर्ष की थी तो कैंसर से बिमार हो गई,उनके बचने की कोई उमीद न रही। मां को भी अपनी मृत्यु का ऐहसास हो गया था।ृमत्यु के एक दिन पहले मुझे अपने पास विठा कर बोली———'' बेटा, मैं जाने वाली हू। मेरे सभी बच्चे सुखी हैं मैं भगवान की बहुत धन्यवादी हू। मुझे एक ही चिन्ता है वह है आपके पिता की'' मैने मां को आश्वासन देने के लिये कहा———'' मां , अगर आप यह सोच रही हो कि जब आप नहीं रहेंगी तो हम अपने पिता को सम्भालेंगे नहीं, तो आप गलत हैं। मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि हम पिता जी का इससे भी अधिक ध्यान रखेगे।''

मां बोली———बेटे, आप सब पर मुझे पूरा विश्वास है कि आप सब कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। इससे मैं चिन्तित बिल्कुल नहीं हूं।

मेरी चिन्ता का एक ही कारण है और वह है कि तुम्हारे पिता जी ईश्वर के बारे में कभी नहीं सोचते और जो ईश्वर के बारे में नहीं सोचता वह मुसीवत आने पर बहूत कुछ होते हुये भी अपने आप को अकेला पाता है और इसी कारण निर्वल महसूस करता है। घबरा कर मुसीवत को सहन नहीं कर पाता। मैं भी उस समय 40 के करीब था और जो मां ने कहा उसका पूर्ण अर्थ न ही समझ पाया न ही समझने की कोशिश की।
मा के जाने के बाद पिता जी कुछ वर्ष ठीक रहे पर उसके बाद बिमार रहने लगे।

अच्छे ईलाज के बावजूद भी उनकी ह ा ल त बि ग ड़ त ी गई। वह स्वयं उठने बै ठ ने में असमर्थ थे। इस दौरान मैने कई बाते देखी। वह अपनी हालत पर अक्सर रोते रहते। कहां मां कैंसर के क़ष्ट को भी बहुत साहस व धैर्य से सहन करती, जहां तक हो सके किसी को भी कष्ट देना ठीक नहीं समझती थी व ईश्वर को याद करके धन्यवाद करती रहती, वहीं पिता जी थोड़ा सा भी कष्ट आए तो घबरा जाते व सब को बुलाने लगते व उसके बाद दुखी हो कर बैठ जाते, घंटो बात नहीं करते। ऐसा लगता उनको हर एक से शिकायत है, जीवन से, वातावरण से और परिवार जनो व मित्रों से भी। अब जब मां को गये 22 वर्ष हो गये थे, मुझे मां के अन्तिम क्षणों में कहे गये शब्द ———''बेटे मेरी चिन्ता का एक ही कारण है और वह है कि तुम्हारे पिता जी ईश्वर के बारे में कभी नहीं सोचते और जो ईश्वर के बारे में नहीं सोचता वह मुसीवत आने पर बहूत कुछ होते हुये भी अपने आप को अकेला पाता है और इसी कारण निर्वल महसूस करता है। घबरा कर मुसीवत को सहन नहीं कर पाता।''ब

मैं समझ गया था कि जीवन में सभी अच्छे गुण होने के बावजूद ईश्वर की सता को मानना कितना आवश्यक है। ईश्वर को जब हम मानते है तो एक बड़ी 'ाक्ति को हर समय अपने साथ महसूस करते है जो की हमें विपतियों में मुश्किलो व दुखों को सहन करने की 'ाक्ति देती है।

यह सच्चाई है कि जो मनुष्य ईश्वर के नजदीक होता है उसे शारीरिक कष्ट या दूसरी कोई तकलीफ आए भी तो वह बहुत आराम से उसे सहन कर लेता है। उसके चेहरे व आम आदमी के चेहरे में बहुत फर्क होता है। इसका कारण यह है कि ईश्वर भक्त में आन्तरिक खुशी इतनी अधिक होती है कि 'शारीरिक कष्ट उसे प्रभावित ही नहीं करता।

जो भी मनुष्य इस धरती पर आया है उस की हालत सदैव एक तरह नहीं रहती कभी खुशियां हैं तो कभी गम, कभी उतार है तो कभी चड़ाव। ऐसे में ज़रूरी है कि मनुष्य उस 'ाक्ति को माने जिसे ईश्वर कहा गया है वरना समय समय पर आने वाली चुनोतीयों का मनुष्य सफलता से सामना नहीं कर पाता। ईश्वर से जुड़ने का सब से उतम उपाय ईश्वर का ध्यान है जिसे हम ब्रहम यज्ञ भी कहते हैं। ईश्वर पर पूर्ण भरोसा, ईश्वरीय गुणों कां धारण करना ही ईश्वर का ध्यान व भक्ति है। इससे जो अध्यात्मिक शक्ति मिलती है उसके आगे सब दैत्य शक्तियां पराजित हो जाती हैं।

ईश्वर पर भरोसा होना एक बहुत बड़ी उपलब्धी है। पर यह आसानी से नहीं प्राप्त होती। इस के लिये तप और अभ्यास की आवयश्यकता है। श्री पथिक जी के इस भजन में यह सब उभर कर आता है।

भरोसा कर तू ईश्वर पर तुझे धोखा नहीं होगा?

यह जीवन बीत जायेगा तुझे रोना नहीं होगा
क्हीं सुख है, कहीं दुख है, यह जीवन धूप छाया है।
हसीं में ही बिता डालो बितानी ही यह माया है।।

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 100 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE vo'; ns
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFC Code - PSIB0000242**
   Bhartendu Sood PNB 0095000100475207
3. **आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.**
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैक भेज दे।

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म् ।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला

E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

Shivi and her friend with children

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

मधुकर कौड़ा लेखराम (+91 7589219746)

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

fuek.k dh 63 o"kZ

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

Mata Chetnya Puri

Gulshan Tandon

Amir Chand Tandon

Jatinder & sukhjinder arora

Rakesh Soni

Swasti

Kanta Makkar

RNI NO. CHABIL/2012/47744 POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2013-2015

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST
PLASTICS LIMITED
AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870